AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

बालिकाओं की शैक्षिक रुचि पर बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजनाओं के प्रभाव का अध्ययनः ग्वालियर जिले के समस्त विकासखंडों के संदर्भ में

ORIGINAL ARTICLE

Authors
विनीता मित्तल
शोधार्थी
शिक्षा शास्त्र विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

प्रो. कल्पना कुशवाह
मार्गदर्शिका, शिक्षा शास्त्र विभाग
आई.पी.एस.कॉलेज
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

शोध अध्ययन ग्वालियर जिले के समस्त विकासखण्डों के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित शासकीय माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 8 वीं में अध्ययनरत बालिकाओं की, शैक्षिक रुचि पर बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजनाओं (विशेषकर निःशुल्क गणवेश वितरण एवं निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण) के प्रभाव का मूल्यांकन करने हेतु किया गया। वर्तमान शोध समस्या का अध्ययन बालिकाओं (छात्राओं) के सन्दर्भ में किया गया, जिसके अंतर्गत यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या यह योजनाएं बालिकाओं की शैक्षिक रुचि को सार्थक रूप से प्रभावित कर रही है? या यह केवल नामांकन दर में वृद्धि तक सीमित है? शोध विधि का स्वरूप वर्णनात्मक, सर्वेक्षण एवं तुलनात्मक विधि था और न्यादर्श के रूप में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से क्रमशः 187 तथा 190, इस प्रकार कुल (187+190)= 377 बालिकाओं का चयन स्तरीकृत नमूना पद्धति और सरल यादृच्छिक नमूना पद्धति द्वारा किया गया। प्राथमिक आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित शैक्षिक विषयों से संबंधित रुचि प्रपत्र का प्रयोग शोध उपकरण के रूप में किया। group statistics Levene's Test for equality of variance, एवं स्वतंत्र नमूना टी–परीक्षण का प्रयोग सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु किया गया। प्राप्त परिणामों से ज्ञात हुआ – शहरी बालिकाओं का औसत शैक्षिक रुचि स्कोर ($M = 23.35, SD = 3.73$) और ग्रामीण बालिकाओं का ($M = 22.92, SD = 3.67$) प्राप्त हुआ। यद्यपि, शहरी बालिकाओं की औसत शैक्षिक रुचि स्कोर ग्रामीण बालिकाओं की अपेक्षा अधिक है परंतु सांख्यिकी महत्व की दृष्टि से Sig. (2 tailed test) $p = 0.252$ प्राप्त हुआ, जो 0.05 से अधिक हैं । जो इस बात की पुष्टि करता है कि, शहरी एवं ग्रामीण बालिकाओं की औसत शैक्षिक रुचि स्कोर में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है क्योंकि ($p = 0.252 > 0.05$)। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रोत्साहन योजनाओं का प्रभाव दोनों (शहरी और ग्रामीण) क्षेत्रों की बालिकाओं की शैक्षिक रुचि पर समान रूप और समान स्तर की है।

मुख्य शब्द

बालिका शिक्षा, शैक्षिक रुचि, प्रोत्साहन योजनाएँ, निःशुल्क गणवेश वितरण, निःशुल्क पाठ्यपुस्तक, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र.

परिचय

शिक्षा मानव समाज के समग्र विकास की नींव है। इस प्रकार समाज के प्रत्येक नागरिकों का शिक्षित होना वर्तमान समय की महत्ती आवश्यकता है चाहे वह बालक हो या बालिका। अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार, भारतीय संविधान के अनुच्छेद 22 ए के तहत शिक्षा का अधिकार एक मौलिक अधिकार है जिसके अंतर्गत भारत वर्ष के सभी 6 वर्ष से 14 आयु वर्ग के समस्त बालक– बालिकाओं को (कक्षा 1–8) अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। अतः भारत शासन, स्कूली शिक्षा का सार्वभौमीकरण या लोकव्यापीकरण करने के उद्देश्य से केंद्रीय तथा राज्य स्तर पर कई शिक्षा प्रोत्साहन योजनाएं क्रियान्वित कर रही हैं जैसे केंद्र स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान, पी.एम. पोषण शक्ति निर्माण योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, माध्यमिक शिक्षा के लिए बालिकाओं की राष्ट्रीय योजना आदि तथा इसी प्रकार राज्य स्तर पर निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना, निःशुल्क गणवेश वितरण योजना, निःशुल्क साइकिल वितरण योजना, छात्रवृत्ति योजना, मुख्यमंत्री बालिका ई स्कूटी वितरण योजना, मुख्यमंत्री बालिका लैपटॉप वितरण योजना, सैनेट्री पैड योजना, मध्याह्न भोजन योजना आदि ताकि, योजनाओं से लाभान्वित होकर बालिकाएं विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित होकर अध्ययन कर, स्कूली शिक्षा पूरी करें, आत्मनिर्भर बने और आगे बढ़ते चले।

शोध समस्या

शोध अध्ययन ग्वालियर जिले के समस्त विकासखण्डों (जैसे, मुरार, डबरा, भितरवार, घाटीगांव) के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के संदर्भ में किया गया है, ताकि दोनों क्षेत्रों की बालिकाओं (छात्राओं) की शैक्षिक रुचि पर, योजनाओं के प्रभाव की तुलनात्मक स्थिति का विश्लेषण किया जा सके।

उद्देश्य

1. ग्वालियर जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक रुचि का मापन करना।
2. निःशुल्क गणवेश व निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण जैसी बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजनाओं के प्रभाव का आंकलन करना।
3. शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की शैक्षिक रुचि में अंतर का सांख्यिकीय परीक्षण स्वतंत्र नमूना टी–परीक्षण (Independent Samples t-test) करना।

परिकल्पना

शून्य परिकल्पना ($\mathbf{H_0}$): शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक रुचि पर बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजनाओं का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

अनुसंधान विधि

शोध अध्ययन वर्णनात्मक, सर्वेक्षण तथा तुलनात्मक पद्धति

समग्रः ग्वालियर जिले के समस्त विकासखण्डों के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 8 वीं में अध्ययनरत बालिकाएं (छात्राएं)।

नमूनाः शहरी N = 187, ग्रामीण N = 190 (कुल N = 377)। नमूना चयनः स्तरीकृत नमूना पद्धति (stratified Sampling Method) और सरल यादृच्छिक नमूना (Sample Random Sampling)।

उपकरणः स्वनिर्मित शैक्षिक विषय वरीयता क्रम निर्धारण मापनी एवं शैक्षिक विषयों से संबधित रुचि प्रपत्र।

सांख्यिकीय परीक्षणः Descriptive statistics (Mean SD Std-errormean), Levene's Test for equality of variances Independent Samples t-test (2-tailed test).

डेटा विश्लेषण

शून्य परिकल्पना (H_0): शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक रुचि पर बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजनाओं का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

Group Statistics

	छात्रा का क्षेत्र	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
Interest	शहरी	187	23.3529	3.73209	.27292
	ग्रामीण	190	22.9158	3.66642	.26599

Independent Simples Test

	Levene's Test for Equality of Variances	t-Test for Equality of Means								
		F	Sig.	t	df	sig.(2-tailed)	Mean Difference	Std. Error Difference	95% Confidence interval of the Difference	
Interest	Equal Variances assumed	.028	.868	1.147	375	.252	.43	.38	-.31	1.18
	Equal Varinces not assumed			1.147	374.574	.252	-43	.38	-.31	1.18

तालिका से स्पष्ट है कि शहरी छात्राओं का औसत रुचि स्कोर थोड़ा अधिक है ग्रामीण छात्राओं से।

Levene's Test का प्रयोग यह जाँचने हेतु किया गया कि दोनों समूहों की variance समान हैं या नहीं। परिणाम: $F = 0.028$, Sig. (p) $= 0.868$

Sig. $p = 0.868 > 0.05$ H_o accepted मानते हैं कि दोनों समूहों की variances समान हैं।

Independent Samples t-test

$\alpha = 0.05$ (Significance level)

यहाँ पर, $p = 0.252 > 0.05$ H_o स्वीकृत (अर्थात् अंतर सार्थक नहीं)

$t(375) = 1.147$, $p = 0.252 > 0.05$ H_o स्वीकृत।

निष्कर्ष: शहरी और ग्रामीण छात्राओं के शैक्षिक रुचि स्कोर में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। 95 प्रतिशत Confidence Interval = (–0.31, 1.18) में 0 शामिल है, जो अतिरिक्त रूप से दर्शाता है कि औसत अंतर न के बराबर है।

व्याख्या एवं परिणाम

1. शहरी छात्राओं की औसत रुचि स्कोर ग्रामीण छात्राओं से अधिक पाया गया।
2. Levene's Test ($F = 0.028$, $p = 0.868$) के आधार पर variance समान माने गए।
3. Independent Samples t-test का परिणाम $t(375) = 1.147$, $p = 0.252$ रहा; अतः अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है।
4. निष्कर्ष है कि बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजनाएँ (जिनका लाभ छात्राओं को प्राप्त हुआ) शैक्षिक रुचि के संदर्भ में शहरी और ग्रामीण छात्राओं के बीच भिन्न प्रभाव नहीं डाल रही हैं।

यह परिणाम संकेत करता है कि लागू प्रोत्साहन योजनाओं ने शैक्षिक रुचि पर दोनों क्षेत्र की छात्राओं में समान प्रभाव डाला है। संभावित कारणों में शामिल हो सकते हैं:

1. योजनाओं की पहुँच और वितरण की समानता (यदि सही ढंग से लागू हुई हो)।
2. शैक्षिक रुचि पर परिवार, शिक्षक व्यवहार, विद्यालय वातावरण जैसे अन्य कारक अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं।
3. शहरी व ग्रामीण दोनों समूहों में छात्राओं द्वारा योजनाओं का उपयोग/स्वीकृति समान रही हो।

इसके साथ ही, यह निष्कर्ष यह भी संकेत कर सकता है कि केवल इन भौतिक प्रोत्साहनों (कपड़ा/पुस्तक) से रुचि में बड़ा परिवर्तन नहीं हो रहा रुचि एक मनोवैज्ञानिक घटक है जिसे निरंतर शैक्षणिक प्रैक्टिस, प्रेरक शिक्षण विधियाँ व सह–पाठ्य गतिविधियाँ प्रभावित करती हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्वालियर जिले के समस्त विकासखण्डों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की शैक्षिक रुचि में बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजनाओं के कारण कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया ($p = 0.252$)। अतः नीति निर्माताओं के लिए सुझाव है कि केवल भौतिक प्रोत्साहन पर्याप्त नहीं हो सकते, रुचि व सीखने को बढ़ाने हेतु अध्यापन पद्धतियों, शिक्षकों के प्रशिक्षण तथा विद्यालयीन वातावरण पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

1. प्रोत्साहन योजनाओं के साथ–साथ अध्यापन–उन्नयन कार्यक्रम (teacher training) और छात्र–प्रेरक गतिविधियों को जोड़ा जाए।
2. ग्रामीण विद्यालयों में अतिरिक्त शैक्षिक संसाधन व सह–पाठ्य गतिविधियाँ उपलब्ध कराई जाएँ।
3. योजनाओं की कार्य–प्रणाली (distribution mechanism) की समय–समय पर निगरानी व मूल्यांकन किया जाए।
4. भविष्य के अनुसंधान में अनुदर्ध्य Longitudinal डिज़ाइन और नियंत्रित हस्तक्षेप (intervention) प्रयोग किए जाएँ ताकि कारणात्मक निष्कर्ष निकाले जा सकें।

सीमाएँ

1. यह एक क्रॉस–सेक्शनल (cross- sectional) अध्ययन है; इसलिए कारणात्मक निष्कर्ष सीमित हैं।
2. अनुसंधान केवल शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है; निजी विद्यालयों को शामिल नहीं किया गया।

संदर्भ सूची

1. Best, J. W. & Kahn, J.V. (2016) *Research in Education,* Pearson Education, London.
2. Government of Madhya Pradesh (2023) Balika Shiksha Protsahan Yojana, Guidelines, School Education Department, Bhopal.
3. Kothari, C.R. (2014) *Research Methodology: Methods and Techniques,* New Age International Publishers, 3rd edition, New Delhi.
4. NCERT (2022) Annual Report on Girls Education in India, https://www.education.gov.in/en/annual-report-2022-23-ncert-english, Accessed on 10/06/2025.
5. Sharma, R.A. (2019) *Educational Research and Statistics,* R. Lall Book Depot, Meerut.
6. UNESCO/UNICEF reports on girls education for general policy continue, Unicef https://share.google/jmRao8k66pGpXW0vs, Accessed on 02/06/2025.

––==00==––